आराधना

प्रस्तावना

आप सबका इस साल में स्वागत... एक साल बीता गया यह एक साल हमें बड़ा बना गया थोडा सयाना बना गया..... आप सभी एक ऐसे मुकाम पर हैं जहाँ से आप दुनिया को एक अलग नजरिए से देख सकते हैं..... इसी कारण अब आप को अपने से उपर उठ कर सोचना होगा .... अपने साथ-साथ सभी की भलाई सोचनी होगी।

ज्ञानेश्वर महाराज भी आप ही उम्र के थे जब उन्होंने अपनी प्रार्थना में सबकी भलाई की बात कही थी------

आतां विश्वात्मके देवे, येणे वाग्यज्ञे तोषावे,

तोषोनि मज द्यावे, पसायदान हे ||१||

जे खळांचि व्यंकटी सांडो, तया सत्कर्मी रती वाढो,

भूतां परस्परे जडो, मैत्र जीवांचे ||२||

दुरितांचे तिमिर जावो, विश्व स्वधर्म सूर्ये पाहो,

जो जे वांछील तो ते लाहो, प्राणिजात ||३||

आप भी इन्हीं विचारों से प्रेरित हों तथा आप में भी सभी के भलाई की कामना जागे इसी विचार से वसंत बापट जी द्वारा रचित यह कविता दी जाती है। यह कविता वास्तव में मराठी में है और यहाँ पर उसका अनुवाद दिया जाता है।

देहमंदिर, चित्तामंदिर एक ही है प्रार्थना।

सत्य-सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना।।

अर्थ- कवि प्रस्तुत कविता में हमें हमारे देह तथा मन को मंदिर समझने का आग्रह करते हैं,

एक ऐसा मंदिर जहाँ सत्य सुंदर और पवित्रता की सदैव आराधना हो। सत्य शिव और सुंदर ये हमारे जीवन के तीन अभिन्न अंग होने चाहिए इसीलिए हमारे मन में इनकी स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दुखियारों का दुःख जाए, है यही मनकामना ।

वेदना को परख पाने जगाएँ संवेदना।।

दुर्बलों के रक्षणार्थ पौरुष की साधना।।

अर्थ – कवि चाहतें हैं कि दुःख से पीड़ित लोगों का दुःख दूर हो और हममें इतनी संवेदना जगे कि हम दूसरों का दर्द समझ सकें। हम अपने बल का प्रयोग हमेशा दुर्बलों की रक्षा के हेतु करें।

जीवन में नवतेज हो, अन्तरंग में भावना।

सुन्दरता की आस हो मानवता की उपासना।।

शौर्य पावें, धैर्य पावें, यही है अभ्यर्थना।

अर्थ- हमारे जीवन में हमें हमेशा कुछ नया करने की चाह हो, क्योंकि इसी कारण ही जीवन में नवीनता रहती है, कहतें हैं कि जमा पानी सड़ जाता है और बहता साफ़ कहलाता है। हमें अपने जीवन को गतिशील बनाना होगा और गतिशीलता के लिए नित कुछ नया करना होगा।

कवि कहतें हैं कि ऐसा करते समय भी हमें सुन्दरता की उपासना करनी चाहिए कवि चाहतें हैं कि हममें शूरता के साथ धीरता भी हों ताकि हम अपने बल का उचित उपयोग कर सकें।

भेद सभी अस्त होवें, बैर और वासना।।

मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना।

मुक्त हम,चाहें एक ही बंधुता की कामना।।

अर्थ- अंतिम अनुच्छेद में कवि एकता की बात करतें हैं कवि कहतें कि हमारे सारे भेद मिट जाए तथ मानवता के एक होने की जो कल्पना है, वह सत्य हो जाए। यही एकता का तथा प्यार का बंधन हमें ईर्ष्या, जलन जैसी भावनाओं सा मुक्त कराएगा अतः महत्वपूर्ण है बंधुता की भावना.....

देह मंदिर, चित्त मंदिर एक तेथे प्रार्थना
सत्य सुंदर मंगलाची, नित्य हो आराधना

दुःखितांचे दुःख जावो ही मनाची कामना
वेदना जाणावयाला जागवू संवेदना
दुर्बळाच्या रक्षणाला पौरुषाची साधना

जीवनी नव तेज राहो, अंतरंगी भावना

सुन्दराचा वेध लागो, मानवाच्या जीवना
शौर्य लाभो, धैर्य लाभो, सत्यता सशोधना

भेद सारे मावळू द्या वैर साऱ्या वासना
मानवाच्या एकतेची पूर्ण होवो कल्पना
मुक्त आम्ही फक्त मानू बधुतेच्या बंधना

परियोजना:- बच्चों यह कविता आपको कंठस्थ करके अपनी कक्षा में सुनाना है,

तथा आपकी कक्षा द्वारा गाई हुई कविता की रेकोर्डिंग हमें भी भेजनी होगी।